PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE I

बरेली जनपद में जनसंख्या के आर्थिक प्रतिरूप का भौगोलिक विवेचन

डॉ. शिव कुमार सिंह
एसो. प्रोफ़ेसर भूगोल
राजेंद्र प्रसाद पी जी कॉलेज मीरगंज (बरेली)
(उत्तर प्रदेश) भारत

सारः—

प्रस्तुत विश्लेषण जनपद बरेली की जनसंख्या के आर्थिक प्रतिरूप उन लोगों के समूह को संदर्भित करता है जो किसी देश या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में काम करने और योगदान करने में सक्षम और इच्छुक हैं। इसमें जनसंख्या का वह भाग भी शामिल रहता है जो कार्यरत हैं या फिर रोजगार की तलाश कर रहे हैं,साथ ही वे स्व—नियोजित हैं या अपना स्वंय का व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। जनपद की क्षेत्रीय जनसंख्या की और उनकी विशेषताओं को उकेर कर यह स्पष्ट है करने का प्रयास कि जनपदीय जनसंख्या की वास्तविक आर्थिक स्थिति क्या है ? जिससे जनपदीय जनसंख्या का आर्थिक स्वरूप स्पष्ट हो सके।

जनसंख्या का आर्थिक प्रतिरुप किसी विशेष क्षेत्र या देश में रहने वाले लोगों की कुल संख्या को संदर्भित करता है जो काम करने, उपभोग करने और निवेश करने जैसी आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने में सक्षम हैं। जनसंख्या के आर्थिक आकार और विशेषताओं का किसी क्षेत्र या देश के आर्थिक प्रदर्शन के साथ—साथ इसकी सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

आर्थिक विकास के प्राथमिक चालकों में से एक जनसंख्या का आर्थिक स्वरुप ही है। जनसंख्या का एक बड़ा भाग संभावित श्रमिकों, उपभोक्ताओं और निवेशकों का ही होता है। यद्यपि जनसंख्या के आकार और आर्थिक विकास के बीच संबंध सीधा नहीं है। तथापि अन्य कारक, जैसे जनसंख्या की शिक्षा और कौशल, संस्थानों और बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता, और नवाचार और तकनीकी उन्नति का स्तर, सभी आर्थिक प्रदर्शन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, बढ़ती जनसंख्या संसाधनों और पर्यावरण पर भी दबाव डालती है, जिसके नकारात्मक आर्थिक और सामाजिक परिणाम हो परिलक्षित होते हैं।

जनसंख्या के आर्थिक प्रतिरुप का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू इसकी संरचना है। जनसंख्या की आयु, लिंग और जातीय संरचना सभी आर्थिक परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जहां एक ओर उम्र बढ़ने वाली जनसंख्या का आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि कार्यबल में अपेक्षाकृत कमी आ जाती है। दूसरी ओर, एक युवा और बढ़ती जनसंख्या आर्थिक विकास के अवसर प्रदान करती है, क्योंकि संभावित श्रमिकों और उपभोक्ताओं का एक बड़ा पूल है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या के लिंग और जातीय संरचना के महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक प्रभाव होते हैं। कुल मिलाकर, आर्थिक प्रदर्शन और सामाजिक गतिशीलता को समझने में आर्थिक जनसंख्या एक महत्वपूर्ण कारक है। बढ़ती और विविध आबादी आर्थिक विकास और नवाचार के अवसर प्रदान कर सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि इन अवसरों को निष्पक्ष और स्थायी रूप से साझा किया जाए। शिक्षा, बुनियादी ढाँचे, विविधता और स्थिरता के मुद्दों को संबोधित करके, नीति निर्माता और व्यवसाय सभी के लिए अधिक समृद्ध और न्यायसंगत भविष्य बनाने में मदद कर सकते हैं।

परिचय :-

क्षेत्र विशेष की जनसंख्या वहाँ के मानवीय संसाधन का दर्पण होती है अर्थात् जनसंख्या संसाधन के समुचित व योजनाबद्ध ढंग से उपयोग से उस क्षेत्र

का विकास सुनिश्चित होता है। जनसंख्या यह संदर्भ बिन्दु है जहाँ से अन्य तत्वों का अवलोकन किया जाता है परिणाम स्वरुप सभी सामाजिक शास्त्रों में जनसंख्या का अध्ययन किया जा रहा है।[1] अतः हम कह सकते हैं कि क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक संसाधनों का यथोचित उपयोग के साथ ही व्यापारिक और औद्योगिक प्रतिरूप वहाँ की निवासित जनसंख्या और उसके वितरण, घनत्व, स्वभाव और उसकी कार्यक्षमता पर निर्भर करता है जो क्षेत्र विशेष की जनसंख्या का विश्लेषण को और भी महत्वपूर्ण बनाता है। यद्यपि जनसंख्या और उसके कार्य कलापों पर प्राकृतिक कारकों के प्रभावों को नहीं नकारा जा सकता है तथापि उनकी विशेषताओं के कारण ही क्षेत्र की आर्थिक संरचना को मूर्तरूप प्रदान करने में योगदान कर रहे तथ्यों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। उक्त परिप्रेक्ष्य में मायर एवं बाल्डविन महोदय ने उचित ही कहा है कि "आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दीघ्रकाल में किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।[2]

भारत मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है। यहां की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवासित है और सकल घरेलू उत्पादन में लगभग 50 प्रतिशत का योगदान करती है। यदि हम क्षेत्रफल की बात करें तो भारत देश सातवें स्थान पर है,जनसंख्या में दूसरे स्थान पर है जहां मात्र 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल के साथ विश्व की 17.4 प्रतिशत जनसंख्या यहां निवास करती है। भारत जनसंख्या दृष्टि से दूसरा तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवां स्थान रखता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत जनसंख्या 121.02 करोड़ थी। प्रतिवर्ष हमारे देश में 1.6 करोड़ जनसंख्या बढ़ जाती है, जो आस्ट्रेलिया की जनसंख्या के लगभग बराबर है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या अनुमानतः 141. 03 करोड़ के लगभग है। विश्व की दृष्टि से प्रथम स्थान रखने वाला चीन की जनसंख्या व भारत की जनसंख्या में धीरे–धीरे अन्तर कम रहा है[3] और ऐसा अनुमान है कि 2031 के बाद भारत विश्व में प्रथम स्थान पर पहुंच जायेगा।

प्रस्तुत विवेचन मे जनपद बरेली की जनसंख्या के विभिन्न कार्यकलापों में सलग्न की जानकारी प्राप्त कर जनसंख्या के वास्तविक सामाजिक तथा आर्थिक स्तर का पता लगाना है। विवेचन में द्वितीयक आंकड़ों ,विभिन्न पाठ्य पुस्तकों,

समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित सूचनाओं को आधार मानकर निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र– जनपद बरेली पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित बरेली मण्डल का एक महत्वपूर्ण जिला है। जनपद को प्रशासनिक दृष्टिकोण से छः तहसीलों–बरेली, मीरगंज, फरीदपुर, आंवला, नवाबगंज तथा बहेड़ी बांटा गया है। जनपद की एतिहासिक पृष्ठभूमि महाभारत काल में (पाण्चाल क्षेत्र) ही चली आ रही है। जनपद का नाम विशेष रूप में रुहेला शासक बरलदेव के नाम पर है।[4] जनपद की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 165 मीटर है। जनपद में रामगंगा और उसकी सहायक नदियाँ प्रवाहित होती हैं। जनपद की भू–संरचना पर दृष्टिपात किया जाय तो सामान्यतः बांगर तथा खादर में विभक्त कया गया है। इसके उपविभाजन के अनुसार जनपद में जलोढ़, दोमट, बलुई दोमट एवं नदियों के किनारों पर रेतीली मिट्टी पाई जाती है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4120 वर्ग किमी. है।[5] नगरीय क्षेत्र में 1 नगर निगम 4 नगर पालिका परिषद 1छावनी क्षेत्र, 15 नगर पंचायत और 31 नगर एवं नगर समूह हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र में कुल 144 न्याय पंचायतें 1193 ग्राम पंचायतें हैं। हिमालय की तराई क्षेत्र के निकट स्थित होने के कारण जनपद में सामान्यतः ग्रीष्म ऋतु अधिक गर्म तथा शीत ऋतु अधिक ठण्डी तथा शुष्क रहती है।

जनपद बरेली क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से बरेली मण्डल का प्रमुख नगर है। जनपद 28.19° से 58.54° उत्तरी अक्षांश तथा 78.58°से 79.47° पूर्वी देशान्तर के मध्य समुद्र तल से 165 मीटर की औसत ऊंचाई वाले गंगा के उपजाऊ मैदान में 4120 किलोमीटर भूदृभाग घेरे हुए है।[6] जनपद की उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 102 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 80 किलोमीटर है।[7] जो रामगंगा नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा सिंचित होता है,जिससे जनपद की कृषि अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है।

प्रशासनिक दृष्टिकोंण से जनपद को छः तहसीलों तथा 15 विकासखंण्डों में विभाजित किया गया है। जनपद का मुख्यालय बरेली नगर में स्थित है जो राज्य एवम् देश के अन्य भागों से सड़क, रेल व वायु मार्ग भली–भांति जुड़ा हुआ

है। बरेली अन्य समीपवर्ती जनपदीय सीमाओं में पूर्व में पीलीभीत और शाहजहांपुर, पश्चिम में रामपुर, दक्षिण में बदायूं और उत्तर में उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) से लगा हुआ है।

बरेली जनपद की जनसंख्या की आर्थिक–संरचना :– किसी भी देश के आर्थिक विकास में वहाँ की जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह सर्वथा सत्य है कि श्रम की उपलब्धता जनसंख्या के आकार व उसके गुणों पर निर्भर करती है। श्रम, उत्पादन का साधन एवं साध्य दोनों है। किसी भी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या के आर्थिक क्रिया–कलाप और उनका स्तर उस क्षेत्र के विकास तथा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अर्थात् आर्थिक विकास एक ओर पूंजी व कार्यशील शक्ति में वृद्धि की दरों के मध्य और दूसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि की दर के मध्य ऐसा सम्बन्ध है जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।[8] प्रो0यंगसन ने भी कुछ ऐसा ही कहा कि आर्थिक प्रगति का तात्पर्य किसी समाज से सम्बन्धित आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की शक्ति में वृद्धि करना है।[9]

यह सर्व विदित है कि विश्व के विभिन्न भागों में जीवित रहने तथा भोजन की प्राप्ति के लिए किसी न किसी रूप में कोई न कोई कार्य अवश्य करता है। मानव ने जब से इस पृथ्वी पर कदम रखा है, उसने अपनी उदर पूर्ति के लिए किसी न किसी रूप में उत्पादन कार्य अवश्य किया है। जब मानव अपनी गुफाओं से निकलकर जंगली पशुओं का शिकार करके अपनी भोजन की आवश्यकता पूर्ण करता था तब उसका व्यवसाय शिकार करना भी एक आर्थिक क्रिया माना गया था। सभ्यता और संस्कृति के विकास से उसके कार्य कलापों में भी परिवर्तन होता गया। वर्तमान में मानव विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में संलग्न है जैसे–कृषि कार्य, आखेट या शिकार, फल एवम् फूलों को एकत्रित करना, मछली पकड़ना, लकड़ी काटना व कल कारखाने स्थापित करना व्यापार और परिवहन इत्यादि ये सभी कार्य मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं भोजन प्राप्ति के लिए कर रहा है, ये सभी कार्य आर्थिक क्रियाओं से विश्व सम्बन्धित है। मानव समाज में कार्यों की बढ़ती हुई संख्या व उनकी परस्पर निर्भरता ने अनेक नये नये व्यवसायों का इस सृजन किया है। परिणाम स्वरूप आर्थिक क्रियाओं में विविधता पायी जाने लगी है। प्राकृतिक एवम् सांस्कृतिक विभिन्नताएं आर्थिक क्रियाओं को

मूलतः प्रभावित करती हैं। आर्थिक जनसंख्या में मुख्य रुप से जनसंख्याा का वह भाग कियाा जाता है जो विभिन्न प्रकार आर्थिक क्रियाओं में संलग्न रहता है दूसरे शब्दो में उसे हम कार्यशील जनसंख्या भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत 15–60 वर्ष की आयु के व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है।

वास्तव में कार्यशील जनसंख्या भिन्न–भिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं में संलग्न रहती हैं, जो क्षेत्रीय भौतिक संसाधनों की भिन्नता पर आधारित होते हैं, यथा– उपजाऊ मिट्टी वाले भागों को जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न रहती है। ठीक उसी प्रकार कटे–फटे समुद्र तटीय क्षेत्रों में मछली पकड़ने का व्यवसाय, सघन वनस्पति क्षेत्रों में वनों पर आधारित व्यवसाय, विस्तृत घास के मैदानों में पशुपालन व खनिज जमाव वाले क्षेत्रों में खनन व्यवसाय की प्रधानता होती हैं।[10] यद्यपि प्रत्येक राष्ट्र अथवा क्षेत्र में वहाँ की मिट्टी, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन और श्रम के आधार पर वहाँ की आर्थिक नीति निर्धारित होती है। कृषि प्रधान देशों में कृषि के अतिरिक्त कृषि आधारित उद्योग धन्धों पर भी ध्याान केन्द्रित किया जाता है, खनिज सम्पदा से भरपूर देशों की अर्थव्यवस्था उद्योग प्रधान होती है। तथापि हम कह सकते है कि भिन्न–भिन्न प्रकार के आर्थिक क्रियाओं के परिणामस्वरूप आर्थिक भू–दृश्य भी अलग–अलग होते हैं।[11] पृथ्वी के धरातल पर मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक वातावरण के पदार्थों या तत्वों का उपयोग करता है। उन्हें परिवर्तित करता है, उन्हें प्रभावित भी करता है तथा उनसे प्रभावित भी होता है। मानव के परस्पर प्रभाव की छाप पृथ्वी के धरातल पर सांस्कृतिक दृश्य–भूमि कहलाती है। यदि सांस्कृतिक दृश्य–भूमि के इन दृश्यों में से ऐसे दृश्यों को छाँट लिया जाये, जिनमें आर्थिक क्रियायें दृ ष्टिगोचर होती है, तो ऐसे दृश्यों के वर्ग को हो आर्थिक दृश्य–भूमि कहते हैं।[12]

सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव ने अपने तकनीकी एवम् प्रौद्योगिकी क्षेत्र और उनकी कार्य कुशलता में अपेक्षा से अधिक परिवर्तन किया है, जिसके फलस्वरूप आर्थिक क्रियाओं में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। जैसे–जैसे जीवन निर्वाह में कृषि से वर्तमान यन्त्रीकृत व्यापारिक कृषि यन्त्रों पर आधारित पशुपालन, मत्स्य व्यवसाय व लकड़ी काटना इत्यादि में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। कभी–कभी समान भौगोलिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में भी

तकनीकी विकास की परिवर्तनशीलता के फलस्वरूप व्यवसायों में भिन्नता पायी गई है। विश्व में भौतिक, प्रादेशिक व संस्कृति विभिन्नता के आधार पर विभिन्न प्रकार की अर्थव्यवस्थायें परिलक्षित होती हैं इन अर्थव्यवस्थाओं ने मानव के व्यवसायों को **चार** वर्गों में विभाजित किया है–

1.प्राथमिक व्यवसाय–मुख्य रुप से कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या ।

2.द्वितीयक व्यवसाय– मुख्य रुप से तकनीकी उपयोग द्वारा प्राथमिक उत्पादों के रुप में परिवर्तन कर उपयोग करना ।

3.तृतीयक व्यवसाय– प्राथमिक एवं द्वितीयक व्यवसाय द्वारा उत्पाद को उपभोक्ता तक की सेवा की सेवा प्रदान करना तृतीयक व्यवसाय के अन्तर्गत आता है।

4.चतुर्थ व्यवसाय– इसके अनतर्गत मुख्यतः तृतीय व्यवसाय में सम्मलित सेवा व्यवसायों के विशेष सेवा प्रदान करने वाले यथा– शिक्षक,डाक्टर, वैज्ञानिक,इंजीनियर इत्यादि को शामिल किया गया है।

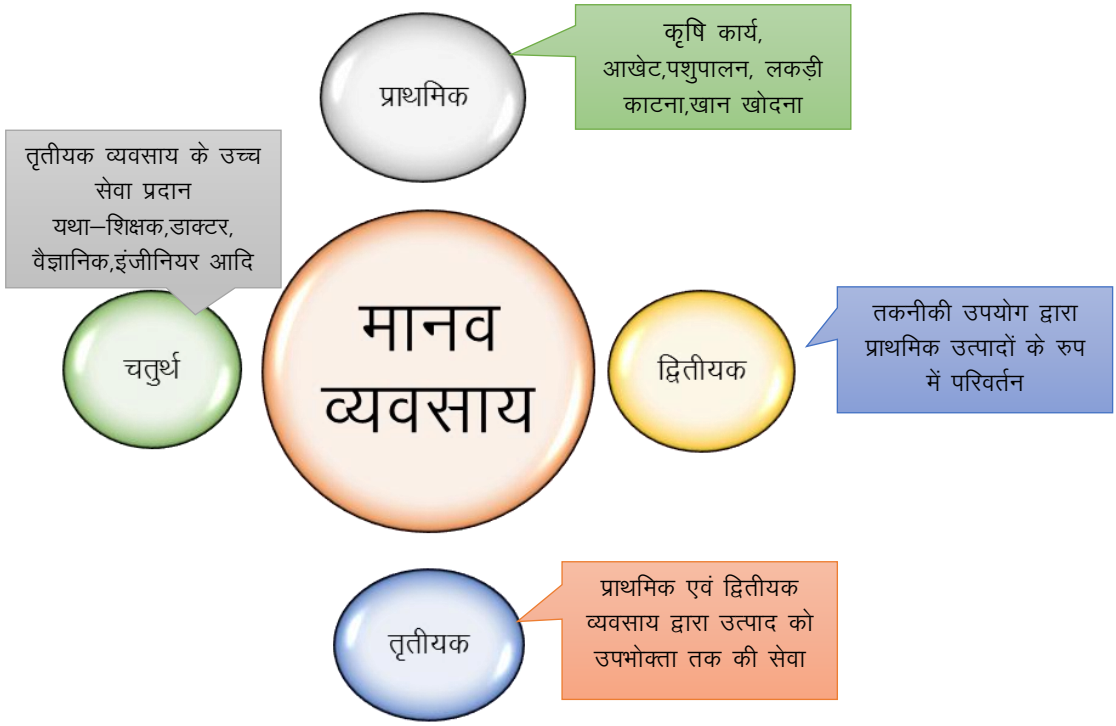

वर्तमान में तृतीयक व्यवसाय के वह कर्मकर यथा– शिक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि के रूप में कार्य करते हैं, उनको चतुर्थक व्यवसाय के वर्ग में शामिल किया जाता है।[13] देश एवं प्रदेश की भाँति अध्ययन क्षेत्र जनपद बरेली की जनसंख्या भी अनेकों व्यवसायों में संलग्न है। जनपद की कार्यशील जनसंख्या को निम्न सारिणी के द्वारा प्रदर्शित किया गया है

जनपद बरेली की कार्यशील जनसंख्या का विवरण वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर

वर्ष	कुल जनसंख्या	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक	अन्य कर्मकर	कुल मुख्य कर्मकर	सीमान्त कर्मकर	कुल कर्मकर	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1971	1779867	339781	57094	11396	132147	80841	0	540418	30.36
1981	2273838	384932	77831	14873	124185	655950	3655	659605	29.00
1991	2834614	432580	117162	12171	252234	814147	12491	826638	29.16
2001	3618589	377830	124195	32342	328454	862821	322261	1185082	32.74
2011	4448359	323067	210945	80554	429346	1043912	358059	1401971	31.51

स्रोत : सामाजार्थिक समीक्षा 2019 जनपद बरेली,[14]

बरेली जनपद में आर्थिक जनसंख्या वितरण
प्रतिरुप–2020

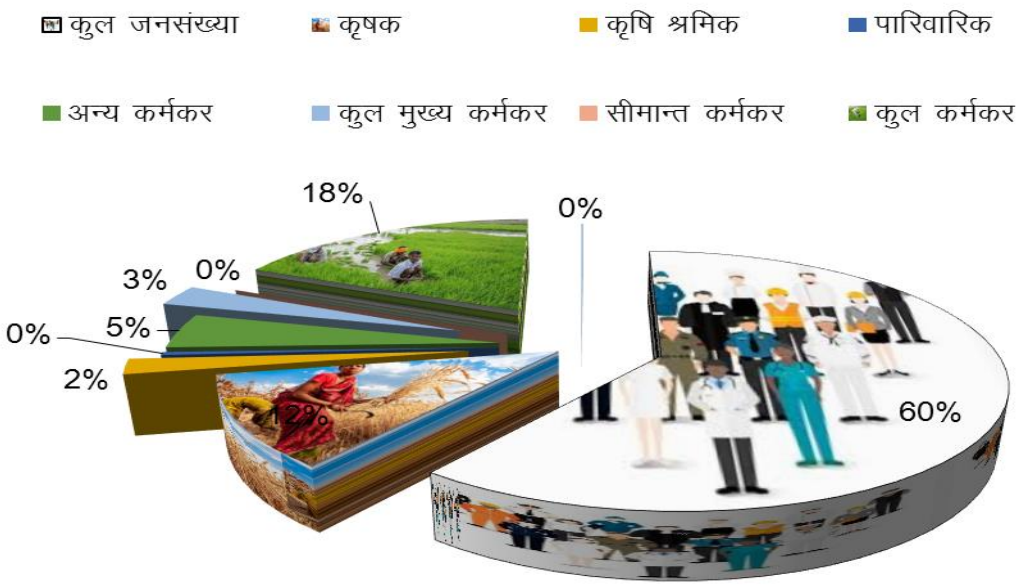

उपरोक्त से स्पष्ट है कि बरेली में वर्ष 2011 में कुल मुख्य कर्मकर 1043912 थे जिनमें से 323067 कृषक, 210945 कृषक श्रमिक, 805504 पारिवारिक क्रिया कलापों में लगे व्यक्ति तथा 429346 कर्मकर अन्य कार्यों में संलग्न थे। यदि हम जनपद में केवल कृषकों व कृषि श्रमिकों की संख्या पर दृष्टिपात् किया जाय तो 1971 में 339781, 2011 में घटकर 323067 कृषक किन्तु 1971 में 57094, 2011 में तीव्रता से वृद्धि होकर 210945 कृषि श्रमिक हो गये। यदि पिछले पांच दशकों की संख्या पर दृष्टिपात किया जाय तो हम देखते हैं कि प्रति दशक कृषकों की संख्या में कमी तथा श्रमिकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

उपरोक्त तालिका पर दृष्टिपात किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि जनपद में कुल जनसंख्या के कुल कर्मकरों में पिदले पांच दशकों में कोई विशेष

परिवर्तन नहां हुआ है अपितु जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ कृषि श्रमिको की संख्या में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि दर्ज की गई है।

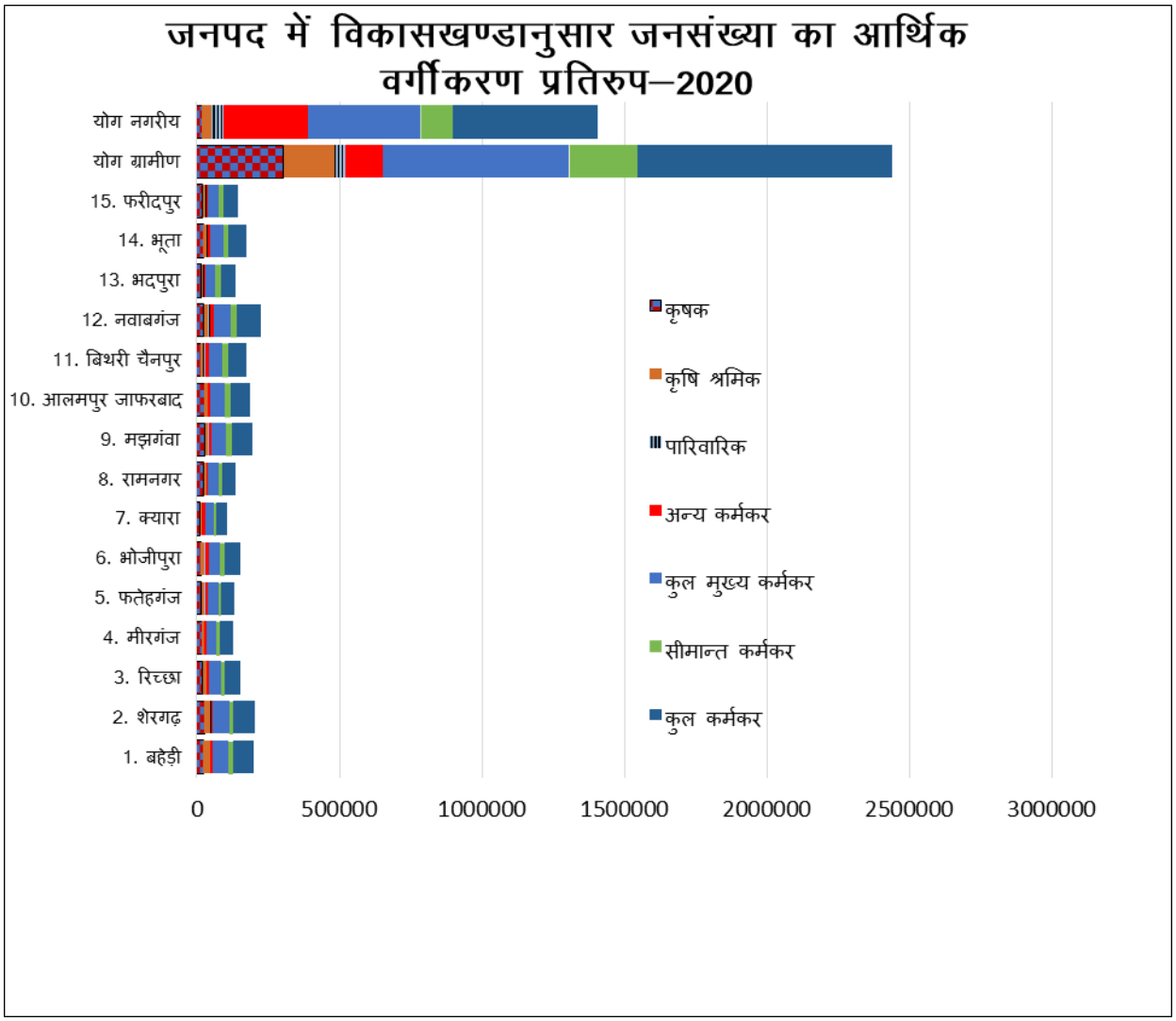

स्त्रोत–जिला सांख्यकी पत्रिका–2020 किन्तु वर्गीकरण 2011 की जनगणनानुसार है।[15]

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी देश की उन्नति के साधनों में कार्यिक जनसंख्या अधिक महत्व होता है जो प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर देश की औद्योगिक एवं व्यापारिक उन्नति करती है। इसलिए जनसंख्या के वितरण, उसके घनत्व, लोगों के स्वभाव के साथ–साथ कार्यक्षमता भी महत्वपूर्ण होती है। परिणाम स्वरुप किसी आर्थिक विकास में वहाँ की जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका और गूढ़ हो जाती है। अंततः हम कह सकते हैं कि कार्यशील जनसंख्या किसी भी विकास का परिचायक है। प्रायः देखने में आया है कि विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में कार्यशील जनसंख्या की अपेक्षाकृत अधिक होती है अर्थात् किसी भी देश या क्षेत्र विशेष की आर्थिक नीति वहाँ की मिट्टी, जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ श्रम पर आधारित जनसंख्या के प्रतिरुप पर निर्भर होती है। यहां यह भी सत्य है कि विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाएं भिन्न–भिन्न प्रकार के आर्थिक भू–दृश्य या दृश्यभूमि के उद्भव को नियंत्रित करती है। जनगणना वर्ष 2011 के बाद से कार्यशील जनसंख्या का विवरण 14 उपशीर्षकों के स्थान पर केवल 7 उपशीर्षकों में प्राप्त होने लगा है। वर्ष 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद बरेली के आर्थिक वर्गीकरण में विकासखण्ड नबाबगंज में 5 उपशीर्षकों में प्रथम तथा विकासखण्ड क्यारा 7 में से 4 उपशीर्षकों में सबसे पिछड़ा हुआ है।

संदर्भ :-

1. चान्दना, आर. सी. :जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन्स, राजेन्द्र नगर, लुधियाना, पृष्ठ– 09

2. Meier and Baldwin : Economic Development, p.3

3. बंसल, एस. सी., :मानव भूगोल, केदार नाथ राम नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ 2005, पृष्ठ 122

4. . : जिला गजेटियर 1968 ।

5. : जिला गजेटियर 1968 ।

6. : जिला गजेटियर 1968 ।

7. : जिला गजेटियर 1968 ।

8. W.W.Rostow : Problems of Economic growth, p.10

9. मिश्रा,जे. पी. :जनांकिकी,साहित्य भवन पब्लिकेशन,2004 पृ0–494

10. बंसल, एस.सी., : मानव भूगोल, केदार नाथ राम नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ 2005, पृष्ठ – 122

11.शुक्ला, राजेश शुक्ला, रश्मि, :आर्थिक भूगोल, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ – 29

12.कौशिक, एस.डी., :आर्थिक भूगोल के सरल सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2016–17, पृष्ठ – 35

13.बंसल, एस.सी., : मानव भूगोल, केदार नाथ राम नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ 2005, पृष्ठ – 123

14.जिला सांख्यकीय पत्रिका : जनपद बरेली 2020

15. तदैव